© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 04 | July - September 2017

सन्त शिरोमणि श्री गुरूनानक देव की भक्ति भावना

वीरेन्द्र सिंह वीवीबी0 आई एस एण्ड आई एस साधु आश्रम होशियारपुर।

ISSN : 2348-5612 © URR

संत शब्द 'सह' का पर्यायवाची है। सत्य को पूर्ण तरह अपनाकर उसी के अनुसार अपने जीवन का निर्माण करने वाला मनुष्य 'सन्त' कहलाता है। संत और भक्त में इतना ही अन्तर है कि भक्त भाव प्रवण रामोपासक है तथा सन्त आचारवान, विचारशील समाजसेवी व्यक्ति है। 'संत' को जहां एक तरफ धार्मिक व्यक्ति माना जाता है वहीं दूसरी तरफ ऐसा साधक, जिसने ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया है तथा तीसरी तरफ एक उपदेशक भी है जिसका उपदेश सम्पूर्ण मानव समाज के लिए कल्याणकारी भी हो।

साहित्य तथा सन्तों के बीच श्री गुरूनाकदेव का नाम आदर से लिया जाता है। श्री गुरूनानकदेव सिखों के आद्य गुरू थे। वे मूलतः अध्यात्म–पुरूष थे। दूसरे शब्दों में वह प्रकृति पुरूष थे। आत्मा के गायक थे। वह तत्व–चिन्तक थे। वैदिक ऋषियों की भांति–मूल्यगामी तथा मूल्यगामी दृष्टि के सन्त थे, वेद कालीन तत्व चिन्तन की परम्परा को पुनः उपलब्ध कराने वाले दुस्साहसी, सत्यवादी मसीहा, सृष्टि में व्याप्त परम आत्म चेतना को चिहनकर स्वंय भी निर्भय हो गये और विश्व को निर्भयता का अपूर्व सन्देश दिया। वह ऐसे आत्मदेता थे, जिसने आत्मसाक्षत्कार आत्म चेतना का गुरूमंत्र दिया। वह जीवन्त अनुभूति थे, जागृत संवेदनापुंज, इसलिए वह आत्मसाहय प्राप्त और कर आत्म अनुभव की राह चले। यही उनका मूल मार्ग है। इसी भूमि पर उन्होंने व्यक्ति, समास, धर्म आदि की सीमाओं को तोड़ा, लोगों को मुक्त किया। श्री गुरूनानक देव जी निर्गुण सन्त कवियों में शिरोमणि सच्चे भक्तकवि थे, निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे। इनका जन्म उस समय हुआ जब चारों

और पाप और जुल्म हो रहे थे। उसत्य, भ्रमों और पाखण्डों ने सत्यरूपी चन्द्रमा को ढांप लिया था। इनके आने पर संसार में अज्ञान की धुंध छट गई और ज्ञानरूपी रोशनी फैल गई। भाई गुरूदास ने कहा है कि गुरू नानक देव जी के आगमन से संसार में अज्ञानरूपी अन्धेरा दूर हो गया और ज्ञान का प्रकाश प्रस्फूटित हुआ। गुरू जी के अनुसार परमेश्वर एक है और वह ही सत्य है, वह ओंकार रूप है किसी से वैर नहीं करता। जय श्री साहिब के आरम्भ में ही मूल मन्त्र दिया है–

र ओं सतिनाम करता पुररतु निरभतु निरवैरू।

अकाल मूरति अजूनी सैर्भ गुरू प्रसादि।।

एक ओंकार अर्थात 'एक अकाल पुरूष जो निरन्तर व्यापक हैं। परमात्मा निराकार है इसे शब्द (नाम) द्वारा ही प्रकट किया जा सकता है। गुरू नानक देव जी एकेश्वर वादी थे। कठोपनिषद में भी कहा है कि परमात्मा एक होते हुये अनेक रूपों में बाहर भीतर प्रकाशित हो रहा है। सन्त गुरूनानक जी ने जनता को भक्ति का उपदेश दिया है उनकी भक्ति भावना प्रेम पर आधारित है। उनका विश्वास है कि प्रेम से ही सब कुछ सम्भव है। प्रेम से ही भगवान को भक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। भगवान की भक्ति अत्यन्त दुर्लभ है। यह तलवार की धार पर चलना है, जो कोई इस में हिल जाता है अर्थात, संशय एंव विषयासक्ति के कारण जो भक्ति में दृढ़ नहीं रहता, इस तलवार की धार से कटकर गिर जाता है। अर्थात, नष्ट हो जाता है। भक्ति अविचल होकर चलने का मार्ग है। इस प्रकार चलने वाला भवसागर के पार उतर जाता है।

भक्ति का मार्ग अत्यन्त कठिन है इसके लिए अंहकार को मिटाना पड़ता है। बिना अंहकार को मिटाये भक्ति सम्भव नहीं है। श्री गुरूनानक देव जी के मत में

इस संसार में जिसका लक्ष्य, दीनों, पीड़ितों और गरीबों की सेवा होता है वह जगत में निर्विरोध जीवन व्यतीत करता है। क्योंकि वह राजाओं का भी पूज्य होता है। गुरू जी में भक्ति भावना इस प्रकार कुट–2 कर भरी हुई थी कि वे अपने भावनारूप निरन्तर आचरण करते हुए दीनों, भूख–प्यास से व्याकुल व्यक्तियों को यथोचित दान द्वारा संतुष्ट किया करते थे।

गुरू नानकदेव जी ने जगरचना को मृगतृष्णा बताते हुये मानव के उद्धार के लिए प्रभु की प्राप्ति के निमित ईश्वर उपासना एंव भक्ति भावना पर विशेष बल दिया।

शिक्षा को सद्गुरू में पूर्ण श्रद्धा विश्वास और भक्ति रखनी चाहिए तभी वह गुरू का पूरा–पूरा लाभ प्राप्त कर सकता है। गुरू की वाणी और गुरू में तिल भर भी अन्तर नहीं होता। सच्चे मन से सच्ची भक्ति भावना से ही परमात्मा का ज्ञान बैराग्य, भक्ति और प्रेम को प्राप्ति होती है।

निष्कर्षतः– लिखा जा सकता है कि संत शिरोमणि श्री गुरूनानक को भक्ति प्रेम पर आधारित है। यह प्रेम भक्ति पर आधारित है। यह प्रेम भक्ति भावना में प्रेम को ही सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। श्री गुरूनानकदेव ने अंहकार और भक्ति में वैर का सूत्रपात किया है। भक्ति तभी सफल होती है, जब अंहकार को मिटा दिया जाये। भक्ति से ही व्यक्ति को मोक्ष मिलता है। भक्ति ही सुख का सुगम, सरस, सरल मार्ग है। भक्ति भावना हो मनुष्य जीवन की सफलता है।